''राजस्थान की साहित्यिक विरासत– संस्कृत के संदर्भ में''

*डॉ. अनुजा शर्मा

राजस्थान की साहित्यिक विरासत में संस्कृत के अवदान को इतिहास में सदा गौरवपूर्वक स्मरण किया जाता रहेगा। वैदिक यज्ञ–यागों की पुण्य स्थली सरस्वती नदी जहाँ आकर अन्तः सलिला हो गयी थी, वहीं से राजस्थान की उत्तरी सीमा शुरू होती है। वहाँ प्राचीनतम वैदिक संस्कृति के अवशेष आज भी पीलाबंगा जैसे स्थानों में (गंगानगर जिसे में) पाये जाते है। आठवीं सदी के संस्कृत कवि माघ, जो 'शिशुपालवध' महाकाव्य के प्रणेता हैं और कालिदास, भारवि के साथ महाकवियों की 'बृहत्–त्रयी' बन जाते है, राजस्थान के ही भीनमाल गाँव के थे जो आज जालौर जिले में है।

आधुनिक काल के मूर्धन्य गद्यकारों में वरिष्ठतम पं. अंबिकादत्त व्यास (1858–1900 ई.) जिनका लिखा उपन्यास "शिवराजविजयम्" आधुनिक संस्कृत कथा साहित्य की एक अद्वितीय रचना मानी जाती है, जयपुर (राजस्थान) के ही मूल निवासी थे। घटिकाशतक अथवा शतावधान नामक अभूतपूर्व उपाधियाँ पाने वाले इन विद्वान की कुल 80 रचनाएं मिलती है। 1844 से ही महाराजा कॉलेज जयपुर में संस्कृत एक विषय था। यहाँ मधूसूदन ओझा, सूर्य नारायणाचार्य, वीरेश्वर शास्त्री, मथुरानाथ भट्ट आदि प्रोफेसर रहे। संस्कृत का विश्वकोष "शब्दार्थचिन्तामणि" जो बह्यावधूत सुखानन्दनाथ द्वारा प्रणीत है। इसके अंतिम दो भाग उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह और उनके पुत्र महाराणा फतेह सिंह के आश्रय में उदयपुर के सज्जन प्रेंस से प्रकाशित हुए थे।

संस्कृत के ग्रन्थागार में राजस्थान के जैसलमेर, चित्तौड़ आदि जैन ग्रन्थागार, जयपुर का पोथीखाना और बीकानेर की अनुप संस्कृत लायब्रेरी सुविख्यात है। जयपुर के पोथीखाने, बूंदी के महलों तथा चित्तौड़, नाथद्वारा एवं कांकरोली के ग्रन्थागारों में आज भी ऐसी अनेक अमूल्य संस्कृत पांडुलिपियाँ विद्यमान है जिनका प्रकाशन संस्कृत के इतिहास में नये अध्याय जोड़ सकता है। राजस्थान देश मे एकमात्र ऐसा राज्य हैं जहां संस्कृत शिक्षा का पृथक् निदेशालय स्थापित है। आयुर्वेद और ज्योतिष के अध्ययन के भारत प्रसिद्ध केन्द्र के रूप में 1852 से लेकर आज तक जयपुर प्रसिद्ध रहा है। सवाई जयसिंह ने जयपुर, दिल्ली, मथुरा, बनारस और उज्जैन में जो "जन्तर–मन्तर" बनवाए उनमें यंत्रराज रचना जैसे उन यन्त्रों के सिद्धान्त ग्रन्थों का भी संस्कृत में प्रणयन करवाया। इन वेधशालाओं और उनके सिद्धान्तों का निर्माण विश्व को राजस्थान की एक महत्वपूर्ण देन है। जयपुर में स्थित राष्ट्रीय स्तर का आयुर्वेद संस्थान देश के मूर्धन्य आयुर्वेद शिक्षा संस्थानों में अग्रणी है। वेदों की वैज्ञानिक व्याख्या करने वाले विद्यावाचस्पति राजगुरू पं0 मधुसूदनजी ओझा (संवत् 1923–1996) जिनके लगभग 250 शोधग्रन्थ मिलते है, जयपुर के ही निवासी थे। प्रसन्नता की बात है कि आज भी कलानाथ शास्त्री, हरिराम आचार्य, प्रभाकर शास्त्री, गंगाधर द्विवदी जैसे महान साहित्यकार है, जो संस्कृत में उत्कृष्ट रचनाएं रचने में लगे हैं जिनके कारण राजस्थान का नाम भारत में ही नहीं विश्वभर में विख्यात हो रहा है।

अर्वाचनीय संस्कृत कवि–

भट्ट मधुरानाथ शास्त्री "मंजुरानाथ" का जन्म 23 मार्च 1889 (जयपुर) हुआ। इनकी रचनाएँ है–

काव्य – जयपुर वैभवम्, साहित्य वैभव, गोविन्द वैभवं–

कलानाथ शास्त्री– का जन्म 15 जुलाई 1936 को जयपुर, राजस्थान, भारत में हुआ।

इन्होने काशी–हिन्दु विश्वविद्यालय में संस्कृत साहित्य में साहित्याचार्य तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की उपाधियाँ सर्वेच्च स्थान प्राप्त करते हुए लीं।

देवर्षि रमानाथ शास्त्री का भी नाम श्रेष्ठ राजस्थान के कवियों में आता है, इनकी रचनाएँ है–

दुःखिनी बाला, अनुग्रह मार्ग आदि। श्री श्रेयाशं द्विवेदी– की रचना है शब्दतत्वविमर्श है। श्री हरिकृष्ण शास्त्री की दिव्यादर्श रचना है।

रामकरण शर्मा, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, हर्षदेव–माधव, बनमाली विश्वाल, नारायण दास केशवचन्द्र दास आदि आधुनिक संस्कृत शद्यकार गद्य साहित्य के भण्डागार में अपनी लेखनी से श्री वृद्धि कर रहे है।

जगदगुरू रामानन्दचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले कलानाय शास्त्री ने तो "राष्ट्रपत्ति–सम्मन" K.R. नारायणन रा. संस्कृत अकाद्मी 2002 साहित्य शिखर सम्मन 2002 प्राप्त किया।

प्रभाकर शास्त्री, एवं सूर्यमण मिश्र आदि प्रमुख हमारी साहित्यिक विरासत है

संस्कृत भाषा के प्रमुखं साहित्यिक गृंध– प्रथ्वीराज विजयः कवि जयानक भह इस ग्रंथ की रचना 12 वीं सदी में की गयी थी।

इसके अतिरिक्त राजवल्लभ – (भण्डन) हम्मीर महाकाव्य (नचनचन्द्रसूरी) राजविनोद – सदाशिव भह

कर्म चन्द्र वंशोत्कीतीन काव्यम् – जयसोम

एकलिंग महात्मय – कान्ह व्यास, अमरसार–पकीवध आदि राजस्थानी संस्कृत हिन्दी – ग्रन्थ भण्डार की अमूल्य निधि है।

***सह–आचार्य**
संस्कृत विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टोंक (राज.)

संदर्भ ग्रन्थ सूचिः–

1. विभिन्न सामाजिक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशितलेश्व
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास – अर्वाचीन